चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
16 से 30 सितम्बर 2026 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

'A+'
NAEAB – ICAR
Accredited

कपास में अब चुनाई शुरू हो गयी है। धूप खिलने के बाद ही साफ व् सूखी कपास की चुनाई करें। सूंडी ग्रस्त व् बीमारी युक्त टिंडों की चुनाई अलग करें उसे साफ कपास में मिक्स न करें। पिछले सप्ताह किये गए सर्वे में नरमा की फसल में टिंडा गलन, सूटी मोल्ड, सफेद मक्खी एवं गुलाबी सुंडी का प्रभाव देखने को मिला है, इसलिए अपने खेत का प्रतिदिन निरीक्षण करें। अत्यधिक बारिश के बाद खेत से जल निकासी का प्रबंध अवश्य करें। किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक का प्रयोग कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार ही करें।

अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव

- गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 20 टिंडो को तोड़कर निरीक्षण करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप टिंडों में 5 से 10 प्रतिशत होने पर 100 ग्राम इमामेक्टिन बेन्जोएट 5% एस जी (स्त्रोत: CIB&RC) या 600 मिलीलीटर प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी या 900 मिली क्विनल्फॉस (एकालक्स) 25 ई सी को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- दूसरा छिड़काव 80 – 100 मिली साईपरमेथ्रिन (सिम्बुश/साइपरकिल/साइपरगार्ड) 25 ई सी या 160–200 मिली डेल्टामैथ्रिन (डेसिस) या 100–125 मिली एल्फामेथ्रिन (ऐलफागार्ड) 10 ई सी को 175–200 लीटर पानी में घोलकर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

उर्वरक

- अगेती कपास/बी. टी. में जहां टिंडे दो तिहाई तैयार हो चुके हैं वहां सिंचाई बिल्कुल न करें।
- टिंडे बनने के बाद कपास की फसल में 2 पैकेट **13:0:45** (एन पी के) को 100 लीटर पानी के साथ मिल कर प्रति एकड छिड़काव करें।
- सूक्ष्म पोषक तत्त्व जैसे की बोरोन, मैंगनीज और आयरन केवल लक्षण दिखाई देने पर ही डालें।
- बी.टी. कपास की अधिकतम उत्पादन के लिए बौकी, फूल एवं टिंडे बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) NAA की 25 मि.ली. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

- सितम्बर माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप पाया जाता हैं इसलिए इसकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रत्ति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो 60 ग्राम फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी या 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन (सेफिना) 50 जी/एल डी सी को 175–200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी का ज्यादा प्रकोप होने पर 400 मिलीलीटर पाईरीप्रॉक्सिफेन (डायटा) 10 EC या 240 मिलीलीटर स्पाइरोमैसीफेन (ओबेरोन) 22.9 SC को 200–250 लीटर पानी में घोलकर एक छिड़काव करें।
- जिन किसान भाइयों ने अपने खेतों में बी टी नरमा की लकड़ियों को भंडारित करके रखा है या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि इन किसानों के खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप अधिक होता है।
- इस माह से देशी कपास में चित्तीदार सुंडी का प्रकोप होता हैं जिसमें बोक्की या डोडी का गिरना या पँखडिनुमा बोक्की का बनना, इत्यादि लक्षण शामिल हैं। अतः इसके प्रकोप की निगरानी अवश्य करें। इसके नियंत्रण के लिए 60 मिली क्लोरएंट्रानिलीप्रोल 18.5 एस सी (स्त्रोत: CIB&RC) या 75 मिली स्पाईनोसैड (ट्रेसर) को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें।

रोग प्रबंधन

- जीवाणु अंगमारी और टिंडा गलन रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 50%WP को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।
- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- उखेड़ा रोग में भी पौधे मुरझा कर सूख जाते हैं लेकिन जब पौधों को बीच में से फाड़ कर देखते हैं तो भूरी या काले रंग की धारी दिखाई देती है यह खेड़ा रोग के लक्षण होते हैं
- जड़ गलन और उखेड़ा रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400-500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें ।
- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें।

अन्य सुझाव

- विश्वविद्यालय द्वारा कपास की खेती के लिए हर 15 दिन में वैज्ञानिक सलाह जारी की जाती है अतः उसके अनुसार ही सस्य क्रियांए एवं कीटनाशकों का प्रयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9466812467 8901047834 8558090831

कपास अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

अनुसंधान निदेशालय,चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

सूझ-बूझ के साथ वैज्ञानिक सुझाव अपनाओगे, तो लागत को घटाओगे, भरपूर फसल पाओगे।
आमदनी को बढ़ाओगे, मृदा को भी बचाओगे, खुशहालआजऔर खुशहाल कल को बनाओगे ।।"

नरमा की फसल में वर्तमान स्थिति के चित्र



पत्ती मरोड़ रोग के लक्षण





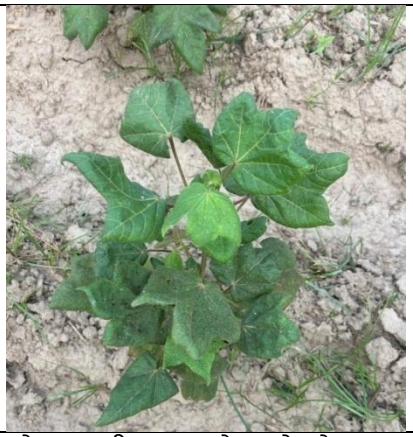
जड़ गलन के लक्षण



टिंडा गलन के लक्षण



हरा तेला प्रकोप के लक्षण



सफ़ेद मक्खी (फाका) के प्रकोप के लक्षण



गुलाबी सुंडी का लार्वा